MAA OMWATI INTERNATIONAL

EDUCATION CITY

V.P.O. Hassanpur, Teh. Hodal Distt. Palwal

(HR.)

NOTES

B.A 3RD SEM

Sub:- भाषा और समाज

भाषा और समाज का अंतःसंबंध–

□ परिचय (Introduction)

भाषा और समाज एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज की संस्कृति, परंपरा, विचारधारा, मूल्य, और जीवनशैली का भी प्रतिबिंब होती है। समाज के बिना भाषा का अस्तित्व नहीं हो सकता, और भाषा के बिना समाज का संगठन अधूरा है।

□ भाषा का अर्थ (Meaning of Language)

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों और इच्छाओं को दूसरों तक पहुँचाता है।

□ **परिभाषा:**

"भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान करता है।"

□ समाज का अर्थ (Meaning of Society)

समाज व्यक्ति समूह का एक ऐसा संगठित रूप है, जिसमें लोग एक-दूसरे के साथ संबंध स्थापित करते हैं, सहयोग करते हैं, और समान मान्यताओं, परंपराओं और मूल्यों को साझा करते हैं।

□ भाषा और समाज का अंतःसंबंध (Interrelationship between Language and Society)

भाषा और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनों का विकास और परिवर्तन साथ-साथ होता है। नीचे इनके अंतर्संबंध के कुछ प्रमुख बिंदु दिए गए हैं:

1□ समाज भाषा को जन्म देता है (Society gives birth to language)

भाषा का विकास सामाजिक परिस्थितियों में ही संभव है। जब मनुष्य समाज में रहकर आपस में संवाद करता है, तब भाषा का निर्माण होता है। समाज के बिना भाषा की आवश्यकता ही नहीं होती।

2. भाषा समाज का दर्पण है (Language reflects society)

भाषा समाज की संस्कृति, सभ्यता, सोच और मान्यताओं का प्रतिबिंब होती है। किसी भी समाज की बोली, शब्दावली और कहावतें उस समाज की जीवनशैली को दर्शाती हैं।
उदाहरण:
राजस्थान की भाषा में "रेगिस्तान" से जुड़ी शब्दावली अधिक है, जबकि हिमालयी क्षेत्रों की भाषाओं में "बर्फ" और "ठंड" से जुड़ी शब्दावली अधिक पाई जाती है।

3. भाषा सामाजिक वर्गों को प्रभावित करती है (Language reflects social structure)

समाज के विभिन्न वर्गों, जातियों, और व्यवसायों के अनुसार भाषाओं या बोलियों में अंतर देखा जाता है।
उदाहरण: शिक्षित और अशिक्षित वर्ग की भाषा-शैली में भिन्नता होती है।

4. भाषा सामाजिक परिवर्तन का साधन है (Language as a tool of social change)

जब समाज में राजनीतिक, आर्थिक या सांस्कृतिक परिवर्तन होते हैं, तो भाषा भी बदलती है। नई तकनीकों, विचारधाराओं और संस्कृतियों के आगमन से भाषा में नए शब्द और प्रयोग जुड़ते हैं।
उदाहरण: "मोबाइल", "इंटरनेट", "सेल्फी" जैसे शब्द आधुनिक समाज में प्रवेश के साथ आए हैं।

5. भाषा सामाजिक पहचान का प्रतीक है (Language as social identity)

हर व्यक्ति या समुदाय अपनी भाषा के माध्यम से अपनी पहचान स्थापित करता है।
उदाहरण: बंगाली, पंजाबी, तमिल आदि भाषाएँ अपने-अपने समुदाय की सांस्कृतिक पहचान हैं।

6. भाषा समाज में एकता लाती है (Language promotes unity)

भाषा लोगों को जोड़ने का कार्य करती है। एक समान भाषा बोलने वाले लोग एक-दूसरे से भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं।
उदाहरण: हिन्दी भारत के विविध प्रांतों के बीच एकता का माध्यम है।

7. समाज भाषा को नियंत्रित करता है (Society controls language use)

किसी समाज में भाषा के प्रयोग की मर्यादा, शिष्टाचार और शब्दों की स्वीकार्यता समाज ही निर्धारित करता है। जैसे — औपचारिक स्थिति में शुद्ध भाषा का प्रयोग, जबकि अनौपचारिक स्थिति में बोलचाल की भाषा का प्रयोग।

8. भाषा और संस्कृति का गहरा संबंध (Language and Culture Relationship)

भाषा संस्कृति का वाहक होती है। लोकगीत, कहावतें, मुहावरे, लोककथाएँ आदि के माध्यम से भाषा संस्कृति को आगे बढ़ाती है।
भाषा के बिना संस्कृति का संरक्षण असंभव है।

उदाहरण (Examples)

समाज	भाषा/बोली	विशेषता
ग्रामीण समाज	देहाती बोलियाँ	स्थानीयता का प्रभाव
शहरी समाज	मिश्रित भाषा	शिक्षा और तकनीक का प्रभाव
व्यवसायिक समाज	तकनीकी भाषा	पेशेवर शब्दावली का उपयोग
धार्मिक समाज	संस्कृत, उर्दू, पंजाबी आदि	धार्मिक परंपराओं से जुड़ी भाषा

भाषा विविधता और भाषा व्यवहार (Bhasha Vividhta aur Bhasha Vyavahar) – पूर्ण विवरण

1. प्रस्तावना (Introduction)

भाषा मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है। मनुष्य के विचार, संस्कृति, ज्ञान और अनुभव भाषा के माध्यम से ही अभिव्यक्त होते हैं।
किन्तु सभी मनुष्य एक जैसी भाषा नहीं बोलते — उनके क्षेत्र, संस्कृति, शिक्षा और समाज के आधार पर भाषा में विविधता पाई जाती है।
इसी प्रकार, व्यक्ति किस परिस्थिति में, किससे और किस उद्देश्य से भाषा का प्रयोग करता है — यही **भाषा व्यवहार** कहलाता है।

इस प्रकार —

“भाषा विविधता और भाषा व्यवहार, समाज की भाषिक संरचना और सामाजिक जीवन के दर्पण हैं।”

2. भाषा विविधता का अर्थ (Meaning of Language Diversity)

भाषा विविधता का अर्थ है — **एक ही भाषा या विभिन्न भाषाओं में पाए जाने वाले भिन्न-भिन्न रूप।**
यह भिन्नता क्षेत्र, जाति, वर्ग, शिक्षा, व्यवसाय, लिंग और स्थिति के आधार पर उत्पन्न होती है।

✳ परिभाषा:

“जब किसी भाषा के प्रयोग में भौगोलिक, सामाजिक या सांस्कृतिक कारणों से भिन्नता दिखाई देती है, तो उसे भाषा विविधता कहते हैं।”

3. भाषा विविधता के प्रकार (Types of Language Diversity)

भाषा विविधता के मुख्यतः **दो प्रकार** होते हैं —

(A) भौगोलिक विविधता (Regional Variety)

- अलग-अलग क्षेत्रों में एक ही भाषा के उच्चारण, शब्दावली और व्याकरण में अंतर पाया जाता है।
- इसे **बोली (Dialect)** भी कहा जाता है।
  उदाहरण:
  - हिन्दी की बोलियाँ — ब्रज, अवधी, भोजपुरी, हरियाणवी, राजस्थानी, मारवाड़ी आदि।
  - तमिल, तेलुगु, बंगाली आदि भाषाओं में भी क्षेत्रीय भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

(B) सामाजिक विविधता (Social Variety)

- समाज के अलग-अलग वर्गों, जातियों, व्यवसायों और शिक्षा स्तर के अनुसार भाषा में अंतर आता है।
- जैसे — शिक्षक की भाषा और मजदूर की भाषा में शब्दों और शैली का अंतर होता है।

(C) व्यवसायिक विविधता (Occupational Variety)

- अलग-अलग पेशों में विशेष शब्दावली प्रयोग की जाती है।
  उदाहरण:
  - डॉक्टर — "ऑपरेशन", "डायग्नोसिस", "रिपोर्ट"
  - इंजीनियर — "ब्लूप्रिंट", "सर्किट", "डिज़ाइन"
  - किसान — "हल", "बीज", "खेत" आदि।

□ (D) शैक्षिक विविधता (Educational Variety)

- शिक्षित व्यक्ति की भाषा अधिक मानकीकृत और शुद्ध होती है, जबकि अशिक्षित व्यक्ति बोलचाल की भाषा प्रयोग करता है।

□ (E) लिंग आधारित विविधता (Gender-based Variety)

- स्त्री और पुरुष के भाषा प्रयोग में अंतर देखा गया है।
  उदाहरण: महिलाएँ प्रायः विनम्र, कोमल और भावनात्मक भाषा का प्रयोग करती हैं।

□ 4. भाषा व्यवहार का अर्थ (Meaning of Language Behaviour)

भाषा व्यवहार से तात्पर्य है — **किस परिस्थिति में, किस उद्देश्य से और किस व्यक्ति के प्रति भाषा का प्रयोग किया जाता है।**
यह सामाजिक व्यवहार का ही भाषिक रूप है।

✳□ परिभाषा:

"भाषा व्यवहार वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज में विभिन्न स्थितियों के अनुसार भाषा का प्रयोग करता है।"

□ 5. भाषा व्यवहार के प्रकार (Types of Language Behaviour)

भाषा व्यवहार को विभिन्न आधारों पर विभाजित किया जा सकता है —

□ (A) औपचारिक भाषा व्यवहार (Formal Language Behaviour)

- यह शिष्ट, मर्यादित और नियमबद्ध भाषा होती है।

- इसका प्रयोग सरकारी, शैक्षणिक या सामाजिक औपचारिकता में किया जाता है।
  उदाहरण:
  - भाषण देना, आवेदन लिखना, समाचार प्रस्तुत करना।

□ (B) अनौपचारिक भाषा व्यवहार (Informal Language Behaviour)

- यह स्वाभाविक और भावनात्मक भाषा होती है।
- परिवार, मित्रों या निकट संबंधों में प्रयोग होती है।
  उदाहरण:
  - घर में बातचीत, दोस्तों से मज़ाक आदि।

□ (C) एकभाषी व्यवहार (Monolingual Behaviour)

- जब व्यक्ति केवल एक ही भाषा का प्रयोग करता है।
  उदाहरण: केवल हिन्दी बोलना।

□ (D) द्विभाषी या बहुभाषी व्यवहार (Bilingual/Multilingual Behaviour)

- जब व्यक्ति दो या अधिक भाषाओं का प्रयोग करता है।
  उदाहरण: कोई व्यक्ति घर पर हिन्दी और विद्यालय में अंग्रेज़ी बोलता है।

□ 6. भाषा विविधता और भाषा व्यवहार का संबंध (Relation between Language Diversity and Behaviour)

भाषा विविधता और भाषा व्यवहार का गहरा संबंध है।
जहाँ विविधता भाषा के भिन्न रूपों को दर्शाती है, वहीं व्यवहार यह बताता है कि व्यक्ति कब, कहाँ और कैसे इन रूपों का प्रयोग करता है।

आधार	भाषा विविधता	भाषा व्यवहार
अर्थ	भाषा के भिन्न रूप	भाषा का प्रयोग करने की प्रक्रिया
कारण	सामाजिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक परिस्थिति, व्यक्ति और उद्देश्य	

आधार **भाषा विविधता** **भाषा व्यवहार**

उदाहरण हिन्दी की बोलियाँ – ब्रज, अवधी घर में बोलचाल की हिन्दी, विद्यालय में मानक हिन्दी

---

7. भाषा विविधता और व्यवहार का सामाजिक महत्व (Social Importance)

- समाज में विभिन्न वर्गों के बीच संवाद की सहजता बढ़ती है।
- भाषा विविधता सांस्कृतिक संपन्नता का प्रतीक है।
- भाषा व्यवहार से सामाजिक संबंध सुदृढ़ होते हैं।
- शिक्षण में भाषा विविधता को समझकर विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से पढ़ाया जा सकता है।

समाजभाषाविज्ञान और उसका स्वरूप (Sociolinguistics and its Nature) – पूर्ण विवरण

1. प्रस्तावना (Introduction)

भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज के विचार, संस्कृति, परंपराओं और जीवनशैली का भी दर्पण है।
भाषा का प्रयोग व्यक्ति समाज में रहकर करता है, इसलिए समाज और भाषा के बीच गहरा संबंध है।
इसी संबंध के अध्ययन को **समाजभाषाविज्ञान (Sociolinguistics)** कहा जाता है।

समाजभाषाविज्ञान यह समझने का प्रयास करता है कि —
भाषा किस प्रकार समाज से प्रभावित होती है और समाज किस प्रकार भाषा को प्रभावित करता है।

2. समाजभाषाविज्ञान की परिभाषा (Definition of Sociolinguistics)

सरल शब्दों में:

“समाजभाषाविज्ञान वह विज्ञान है जो भाषा और समाज के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन करता है।”

□ विद्वानों के अनुसार परिभाषाएँ:

(1) हॉलिडे (Halliday) —

“समाजभाषाविज्ञान भाषा के सामाजिक कार्यों और समाज में उसके प्रयोग का अध्ययन करता है।”

(2) हडसन (Hudson) —

“समाजभाषाविज्ञान वह शाखा है जो यह बताती है कि समाज में लोग भाषा का प्रयोग कैसे और क्यों करते हैं।”

(3) वार्डहॉ (Wardhaugh) —

“समाजभाषाविज्ञान भाषा और सामाजिक संरचना के बीच के संबंधों का विश्लेषण है।”

□ 3. समाजभाषाविज्ञान का स्वरूप (Nature of Sociolinguistics)

समाजभाषाविज्ञान बहुआयामी (multi-dimensional) और अंतर्विषयी (interdisciplinary) स्वरूप रखता है।
यह **भाषाविज्ञान** और **समाजशास्त्र** दोनों के तत्वों को मिलाकर बना है।

✳□ मुख्य स्वरूप (Main Features):

1□ अंतरविषयी स्वरूप (Interdisciplinary Nature)

- समाजभाषाविज्ञान, भाषाविज्ञान और समाजशास्त्र के बीच सेतु का कार्य करता है।
- यह समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, नृविज्ञान और राजनीति विज्ञान से भी संबंध रखता है।

2□ भाषा का सामाजिक अध्ययन (Social Study of Language)

- यह भाषा को केवल व्याकरणिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी देखता है।

- यह समझता है कि भाषा का उपयोग अलग-अलग सामाजिक समूहों में कैसे भिन्न होता है।

3. भाषा विविधता का अध्ययन (Study of Language Variation)

- समाजभाषाविज्ञान यह अध्ययन करता है कि क्षेत्र, वर्ग, शिक्षा, लिंग, व्यवसाय आदि के आधार पर भाषा कैसे बदलती है।
- उदाहरण —
    - उत्तर भारत में "तुम" और "आप" का प्रयोग स्थिति अनुसार बदलता है।
    - ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की बोली में अंतर होता है।

4. भाषा और संस्कृति का संबंध (Language and Culture Relationship)

- भाषा किसी समाज की संस्कृति, परंपराओं और मूल्य प्रणाली को अभिव्यक्त करती है।
- समाजभाषाविज्ञान इस सांस्कृतिक पक्ष का भी अध्ययन करता है।

5. भाषा व्यवहार का अध्ययन (Study of Language Behaviour)

- व्यक्ति कब, कहाँ, किससे, और कैसे बात करता है — यह भी समाजभाषाविज्ञान का विषय है।
- औपचारिक व अनौपचारिक स्थितियों में भाषा के प्रयोग में अंतर अध्ययन का हिस्सा है।

6. भाषा परिवर्तन और विकास (Language Change and Evolution)

- समय के साथ समाज में होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव भाषा पर पड़ता है।
- समाजभाषाविज्ञान यह भी देखता है कि नई तकनीक, शिक्षा या संस्कृति भाषा को कैसे बदलते हैं।

7. भाषा नीति और नियोजन (Language Planning and Policy)

- समाजभाषाविज्ञान भाषा की सामाजिक स्थिति, उसके उपयोग क्षेत्र और शिक्षा में भूमिका के अध्ययन के आधार पर भाषा नीति के निर्माण में सहायक होता है।
- उदाहरण — भारत में "राजभाषा हिन्दी" और "सहायक भाषा अंग्रेज़ी" का निर्धारण।

4. समाजभाषाविज्ञान के प्रमुख क्षेत्र (Major Areas of Sociolinguistics)

क्षेत्र	विषय-वस्तु
1. भाषा विविधता (Language Variation)	भौगोलिक, सामाजिक, व्यवसायिक भिन्नता का अध्ययन
2. भाषा व्यवहार (Language Behaviour)	भाषा का परिस्थिति अनुसार प्रयोग
3. द्विभाषिकता/बहुभाषिकता (Bilingualism/Multilingualism)	दो या अधिक भाषाओं का प्रयोग
4. भाषा परिवर्तन (Language Change)	समय और समाज के साथ भाषा में परिवर्तन
5. भाषा संपर्क (Language Contact)	विभिन्न भाषाओं के संपर्क से नई भाषाएँ/शब्द बनना
6. भाषा और संस्कृति (Language & Culture)	सांस्कृतिक मूल्यों का भाषिक अध्ययन
7. भाषा नीति (Language Policy)	राष्ट्र या राज्य की भाषा-संबंधी योजनाएँ

---

5. समाजभाषाविज्ञान के उद्देश्य (Objectives of Sociolinguistics)

1. भाषा और समाज के संबंध को समझना।
2. समाज में भाषा के विविध प्रयोगों का विश्लेषण करना।
3. भाषा परिवर्तन और विकास के कारणों का पता लगाना।
4. भाषा नीति और शिक्षा में भाषा की भूमिका निर्धारित करना।
5. विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों में भाषा की भिन्नताओं को पहचानना।

6. समाजभाषाविज्ञान का महत्व (Importance of Sociolinguistics)

1. यह समाज में भाषा की वास्तविक स्थिति को समझने में सहायता करता है।
2. यह भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाता है।
3. यह बहुभाषिक समाज में संप्रेषण की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है।

4. यह भाषा नीति निर्धारण में मार्गदर्शन करता है।
5. यह संस्कृति, परंपरा और सामाजिक संरचना के अध्ययन में सहायक है।

7. उदाहरण (Examples)

स्थिति	भाषा प्रयोग
विद्यालय में शिक्षक से	"नमस्ते सर, आप कैसे हैं?" (औपचारिक)
मित्र से बातचीत में	"अरे यार, क्या हाल है?" (अनौपचारिक)
कार्यालय में पत्र लिखना	"महोदय, सविनय निवेदन है कि..." (संरचित भाषा)
घर में परिवार से	"खाना तैयार है?" (बोलचाल की भाषा)

भाषा और समाजशास्त्र (Bhasha aur Samajshastra) – पूर्ण विवरण

1. प्रस्तावना (Introduction)

भाषा और समाज दोनों एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं।
मनुष्य सामाजिक प्राणी है और वह समाज में रहते हुए अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से करता है।
समाज के बिना भाषा का अस्तित्व नहीं हो सकता और भाषा के बिना समाज का संगठन अधूरा है।

भाषा समाज की आत्मा है, और समाज भाषा का आधार।
इसी कारण समाजशास्त्र और भाषा-विज्ञान दोनों का घनिष्ठ संबंध है।

2. समाजशास्त्र का अर्थ (Meaning of Sociology)

समाजशास्त्र (Sociology) वह विज्ञान है जो समाज की संरचना, संगठन, प्रक्रियाओं और सामाजिक संबंधों का अध्ययन करता है।

✳ **परिभाषाएँ:**

- **ऑगस्ट कॉम्ट (Auguste Comte):**

  "समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो समाज के नियमों और संगठन का अध्ययन करता है।"

- **ई. ए. रॉस (E. A. Ross):**

  "समाजशास्त्र मानव के सामाजिक व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है।"

- **गिडिंग्स (Giddings):**

  "समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो समाज में मनुष्यों के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन करता है।"

3. भाषा का अर्थ (Meaning of Language)

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं और ज्ञान का आदान-प्रदान करता है।
यह केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि समाज की संस्कृति, परंपरा और सोच का प्रतीक भी है।

"भाषा समाज की आत्मा का दर्पण है।"

4. भाषा और समाजशास्त्र का संबंध (Relationship between Language and Sociology)

भाषा और समाजशास्त्र के बीच घनिष्ठ और परस्पर निर्भर संबंध है।
जहाँ समाजशास्त्र समाज के ढाँचे, संबंधों और व्यवहार का अध्ययन करता है, वहीं भाषा समाज में संचार और सांस्कृतिक एकता का माध्यम है।

भाषा और समाजशास्त्र के संबंध को निम्न बिंदुओं से स्पष्ट किया जा सकता है —

1. समाज भाषा को जन्म देता है (Society gives birth to Language)

भाषा समाज में रहकर विकसित होती है।
मनुष्य को जब विचार और भावनाएँ व्यक्त करनी होती हैं, तभी भाषा की आवश्यकता होती है।
इस प्रकार समाज भाषा का निर्माता है।

2. भाषा समाज की संस्कृति का प्रतिबिंब है (Language reflects the culture of society)

भाषा समाज की संस्कृति, परंपरा, रीति-रिवाज और मूल्य प्रणाली का दर्पण होती है।
उदाहरण:
राजस्थानी भाषा में रेगिस्तान से जुड़े शब्द जैसे "ओसियां", "धोर", "मरुधर" आम हैं; यह वहाँ की भौगोलिक और सांस्कृतिक स्थिति को दर्शाता है।

3. भाषा सामाजिक वर्गों को विभाजित करती है (Language distinguishes social classes)

समाज में विभिन्न वर्गों (शिक्षित, अशिक्षित, ग्रामीण, शहरी, उच्चवर्ग, निम्नवर्ग आदि) के अनुसार भाषा के प्रयोग में अंतर पाया जाता है।
यह अंतर समाज की संरचना को दर्शाता है।

4. भाषा सामाजिक एकता का माध्यम है (Language promotes social unity)

समान भाषा बोलने वाले लोग एक-दूसरे से भावनात्मक रूप से जुड़ते हैं।
उदाहरण: हिन्दी भारत के विभिन्न राज्यों में एकता का प्रतीक है।

5. भाषा सामाजिक परिवर्तन का साधन है (Language as an instrument of social change)

जब समाज में राजनीतिक, वैज्ञानिक या सांस्कृतिक परिवर्तन होते हैं, तो भाषा में भी परिवर्तन आता है।
नई तकनीकों और विचारों के साथ नए शब्द जुड़ते हैं।
उदाहरण: "कंप्यूटर", "मोबाइल", "ऑनलाइन" आदि।

6. समाज भाषा को नियंत्रित करता है (Society controls language use)

समाज यह तय करता है कि किस परिस्थिति में कौन-सी भाषा या शब्दावली उपयुक्त है।
औपचारिक और अनौपचारिक स्थितियों में भाषा का स्वर बदल जाता है।

7. भाषा समाजशास्त्र के अध्ययन का उपकरण है (Language as a tool in sociology)

समाजशास्त्र में सर्वेक्षण, साक्षात्कार, और संवाद जैसी विधियाँ भाषा के माध्यम से ही संभव होती हैं।
भाषा के बिना सामाजिक डेटा एकत्र करना असंभव है।

5. भाषा और समाजशास्त्र के अध्ययन के मुख्य क्षेत्र (Main Areas of Study)

क्षेत्र	विषय-वस्तु
1. भाषा विविधता (Language Diversity)	समाज में पाई जाने वाली भाषाई भिन्नता
2. भाषा व्यवहार (Language Behaviour)	विभिन्न स्थितियों में भाषा का प्रयोग
3. भाषा और संस्कृति (Language & Culture)	संस्कृति का भाषिक रूप
4. भाषा परिवर्तन (Language Change)	समाज में परिवर्तनों से भाषा का रूपांतरण
5. भाषा नीति (Language Policy)	राष्ट्र या राज्य की भाषा योजना और प्रबंधन
6. बहुभाषिकता (Multilingualism)	समाज में अनेक भाषाओं का सह-अस्तित्व

6. समाजशास्त्र में भाषा की भूमिका (Role of Language in Sociology)

1. **संचार का साधन:** समाजशास्त्र में अध्ययन के लिए संवाद आवश्यक है, जो भाषा के माध्यम से होता है।
2. **सांस्कृतिक एकता:** भाषा सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखती है।
3. **समाज का विश्लेषण:** भाषा के प्रयोग से समाज की संरचना और सोच का पता चलता है।
4. **शिक्षा और ज्ञान का प्रसार:** भाषा ज्ञान और परंपरा को पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित करती है।
5. **सामाजिक परिवर्तन का माध्यम:** भाषा नई विचारधाराओं के प्रसार का माध्यम है।

7. भाषा और समाजशास्त्र का पारस्परिक प्रभाव (Mutual Influence)

भाषा का प्रभाव समाज पर	समाज का प्रभाव भाषा पर
एकता और संस्कृति का निर्माण	बोली और उच्चारण में परिवर्तन

भाषा का प्रभाव समाज पर	समाज का प्रभाव भाषा पर
विचारधारा का प्रसार	नई शब्दावली का निर्माण
सामाजिक चेतना का प्रसार	भाषा की शुद्धता और मानकीकरण

8. उदाहरण (Examples)

- भारत में **हिन्दी** ने उत्तर भारत में सांस्कृतिक एकता स्थापित की।
- **अंग्रेज़ी** ने शिक्षा और तकनीकी क्षेत्रों में आधुनिकता का प्रतीक रूप लिया।
- **ग्रामीण समाज** की भाषा में पारिवारिक और पारंपरिक शब्द अधिक पाए जाते हैं।
- **शहरी समाज** की भाषा में तकनीकी और अंग्रेज़ी मिश्रित शब्द अधिक मिलते हैं।

UNIT -2

भाषा और समुदाय (Bhasha aur Samuday) – पूर्ण विवरण

1. प्रस्तावना (Introduction)

भाषा और समुदाय का संबंध अत्यंत गहरा और परस्पर निर्भर है।
भाषा मनुष्य के विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम है, जबकि समुदाय उन व्यक्तियों का समूह है जो एक साझा भाषा, संस्कृति, परंपरा और जीवनशैली को अपनाते हैं।

भाषा के बिना समुदाय की एकता संभव नहीं, और समुदाय के बिना भाषा का विकास नहीं हो सकता।
दोनों एक-दूसरे के पूरक और सहायक हैं।

"भाषा समुदाय की आत्मा है, और समुदाय भाषा का जीवन।"

2. भाषा का अर्थ (Meaning of Language)

भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों, अनुभवों, भावनाओं और इच्छाओं को दूसरों तक पहुँचाता है।
यह केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि **संस्कृति, परंपरा और सामाजिक पहचान** का प्रतीक है।

"भाषा समाज और समुदाय की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है।"

3. समुदाय का अर्थ (Meaning of Community)

समुदाय (Community) का अर्थ है — समान जीवनशैली, संस्कृति, भाषा, धर्म या भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले लोगों का समूह।
समुदाय में लोगों के बीच **भावनात्मक एकता**, **सामाजिक सहयोग**, और **साझा पहचान** होती है।

✳ **उदाहरण:**

- भाषा समुदाय – हिन्दीभाषी समुदाय, बंगालीभाषी समुदाय
- धार्मिक समुदाय – हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई
- क्षेत्रीय समुदाय – मराठी, पंजाबी, तमिल आदि

4. भाषा और समुदाय का अंतःसंबंध (Interrelationship between Language and Community)

भाषा और समुदाय एक-दूसरे पर गहराई से निर्भर करते हैं।
भाषा समुदाय की पहचान बनाती है, जबकि समुदाय भाषा के संरक्षण, विकास और प्रसार का कार्य करता है।

नीचे इनका संबंध बिंदुवार समझाया गया है —

1 भाषा समुदाय की पहचान है (Language is the identity of a community)

हर समुदाय की अपनी विशेष भाषा या बोली होती है, जो उसकी संस्कृति और परंपरा को दर्शाती है।
उदाहरण:

- पंजाबी समुदाय की पहचान — पंजाबी भाषा
- मराठी समुदाय की पहचान — मराठी भाषा
- तमिल समुदाय की पहचान — तमिल भाषा

2. समुदाय भाषा को विकसित करता है (Community develops the language)

समुदाय के लोग आपस में संवाद करते हुए भाषा को समृद्ध और जीवंत बनाए रखते हैं।
भाषा के नए शब्द, लोकगीत, कहावतें, मुहावरे समुदाय में ही जन्म लेते हैं।

3. भाषा समुदाय की संस्कृति का वाहक है (Language carries community's culture)

भाषा के माध्यम से समुदाय की **संस्कृति, परंपराएँ, लोककथाएँ, गीत, रीति-रिवाज और मूल्य** पीढ़ी दर पीढ़ी संचारित होते हैं।
उदाहरण: राजस्थानी लोकगीत, भोजपुरी लोककथाएँ, पंजाबी बोलियाँ।

4. भाषा समुदाय में एकता लाती है (Language creates unity in community)

एक समान भाषा बोलने वाले लोग एक-दूसरे से भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं।
भाषा सामाजिक और सांस्कृतिक एकता का प्रमुख माध्यम है।

5. समुदाय भाषा के रूप को निर्धारित करता है (Community determines the form of language)

किस क्षेत्र या वर्ग में कैसी भाषा बोली जाएगी, यह समुदाय की सामाजिक स्थिति, शिक्षा, और जीवनशैली पर निर्भर करता है।
उदाहरण: शहरी समुदाय की हिन्दी और ग्रामीण समुदाय की हिन्दी में अंतर पाया जाता है।

6. भाषा समुदाय को बाहरी प्रभावों से जोड़ती है (Language connects community with others)

भाषा अन्य समुदायों से संवाद का माध्यम है।
इसके द्वारा एक समुदाय दूसरे समुदाय से विचारों और संस्कृति का आदान-प्रदान करता है।

7. भाषा और समुदाय का विकास साथ-साथ होता है (Language and community evolve together)

जब समुदाय में आर्थिक, तकनीकी या सांस्कृतिक परिवर्तन होते हैं, तो भाषा भी बदलती है।
उदाहरण: तकनीकी विकास के साथ "मोबाइल", "इंटरनेट", "ऑनलाइन" जैसे शब्द भाषा में आए।

5. भाषा समुदाय (Speech Community) का अर्थ

भाषाविज्ञान में **भाषा समुदाय (Speech Community)** का विशेष महत्व है।

"भाषा समुदाय वह समूह है जिसके सदस्य समान भाषा या उसकी किसी बोली का प्रयोग करते हैं और आपस में नियमित संवाद रखते हैं।"

✳ **उदाहरण:**

- हिन्दी भाषी समुदाय
- बंगाली भाषी समुदाय
- तमिल भाषी समुदाय

यह समुदाय एक विशेष भाषा को अपने संचार और सांस्कृतिक पहचान के रूप में उपयोग करता है।

6. भाषा और समुदाय का समाजशास्त्रीय महत्व (Sociological Importance)

1. भाषा समुदाय की सामाजिक एकता को बनाए रखती है।
2. भाषा समुदाय की संस्कृति और परंपराओं का संवाहक है।
3. भाषा समुदाय के सदस्यों में भावनात्मक जुड़ाव उत्पन्न करती है।
4. भाषा के माध्यम से समुदाय अपनी पहचान और प्रतिष्ठा स्थापित करता है।
5. भाषा समाज में संचार, शिक्षा और सहयोग का माध्यम है।

7. भाषा और समुदाय का परस्पर प्रभाव (Mutual Influence)

भाषा का प्रभाव समुदाय पर	समुदाय का प्रभाव भाषा पर
सामाजिक एकता का निर्माण	भाषा की शैली और शब्दावली में परिवर्तन

भाषा का प्रभाव समुदाय पर	समुदाय का प्रभाव भाषा पर
सांस्कृतिक मूल्यों का प्रसार	नई बोली और उपभाषाओं का निर्माण
शिक्षा और ज्ञान का प्रसार	भाषा के मानकीकरण और संरक्षण की प्रक्रिया
समुदाय की पहचान का निर्माण	भाषा के प्रयोग की मर्यादा तय होती है

8. उदाहरण (Examples)

समुदाय	भाषा	विशेषता
पंजाबी समुदाय	पंजाबी	उत्साही और लोकगीत प्रधान संस्कृति
मराठी समुदाय	मराठी	परंपरा और नाट्य संस्कृति से जुड़ा
राजस्थानी समुदाय	राजस्थानी/मारवाड़ी	लोकगीतों और वीरगाथाओं से युक्त
भोजपुरी समुदाय	भोजपुरी	लोककथाओं और सादगीपूर्ण संस्कृति वाला
बंगाली समुदाय	बंगाली	साहित्य, कला और भावनात्मक अभिव्यक्ति प्रधान

भाषा और जाति (Bhasha aur Jati) – पूर्ण विवरण

1. प्रस्तावना (Introduction)

भाषा और जाति का संबंध भारतीय समाज की सामाजिक संरचना में बहुत गहराई से जुड़ा हुआ है।
भारत जैसे बहुभाषी और बहुजातीय देश में **भाषा (Language)** और **जाति (Caste)** दोनों समाज के महत्वपूर्ण तत्व हैं।

भाषा मनुष्य की अभिव्यक्ति और संचार का माध्यम है, जबकि जाति समाज में व्यक्ति की **सामाजिक स्थिति**, **व्यवसाय**, और **पहचान** को निर्धारित करती है।
कई बार भाषा और जाति मिलकर समाज की सांस्कृतिक संरचना को आकार देते हैं।

"भाषा समाज की आत्मा है, और जाति समाज की परंपरागत पहचान।"

2. भाषा का अर्थ (Meaning of Language)

भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करता है।
यह केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि समाज की संस्कृति, परंपरा और विचारधारा की अभिव्यक्ति है।

उदाहरण: हिन्दी, मराठी, तमिल, गुजराती, उर्दू आदि।

3. जाति का अर्थ (Meaning of Caste)

जाति (Jati) भारतीय समाज की एक पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था है, जिसमें लोगों को जन्म, व्यवसाय, और सामाजिक प्रतिष्ठा के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।
यह व्यवस्था ऐतिहासिक रूप से **वर्ण व्यवस्था** से विकसित हुई है।

जाति समाज में व्यक्ति की सामाजिक पहचान और स्थान निर्धारित करती है।

उदाहरण: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि, तथा उपजातियाँ जैसे यादव, शर्मा, पटेल, जाट, आदि।

4. भाषा और जाति का अंतःसंबंध (Interrelationship between Language and Caste)

भाषा और जाति का संबंध सामाजिक जीवन में गहराई से देखा जा सकता है।
दोनों समाज में व्यक्ति की पहचान, स्थान और संवाद की दिशा को प्रभावित करते हैं।

नीचे इनके संबंध को बिंदुवार समझाया गया है

1 भाषा जातीय पहचान का माध्यम है (Language reflects caste identity)

भारत में अनेक बार किसी व्यक्ति की बोली या भाषा सुनकर उसकी जातीय पृष्ठभूमि का अनुमान लगाया जा सकता है।
कुछ विशेष शब्द, बोलने का तरीका या उच्चारण किसी जाति विशेष से जुड़ा होता है।

उदाहरण:

- ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ जातियों की विशिष्ट बोलियाँ प्रचलित हैं।
- पंडित वर्ग द्वारा प्रयुक्त संस्कृतनिष्ठ हिन्दी।
- व्यावसायिक जातियों द्वारा स्थानीय शब्दावली का प्रयोग।

2. जाति भाषा के प्रयोग को प्रभावित करती है (Caste influences language use)

समाज में उच्च जातियों और निम्न जातियों के बीच भाषा प्रयोग में भिन्नता पाई जाती है।
शिक्षित और उच्च वर्ग के लोग अधिक शुद्ध और औपचारिक भाषा का प्रयोग करते हैं,
जबकि निम्न जाति या ग्रामीण समुदाय में लोकभाषा या बोलचाल की भाषा प्रमुख होती है।

3. भाषा सामाजिक स्थिति का संकेत देती है (Language indicates social status)

किसी व्यक्ति की भाषा शैली, शब्दों का चयन, और बोलने का ढंग उसकी सामाजिक-जातीय स्थिति का सूचक बन जाता है।

उदाहरण:

- शहरी उच्च जाति के लोग संस्कृतनिष्ठ हिन्दी बोलते हैं।
- ग्रामीण श्रमिक वर्ग स्थानीय बोली या मिश्रित भाषा बोलता है।

4. जाति आधारित व्यवसाय और भाषा (Caste-based occupation and language)

हर जाति का पारंपरिक व्यवसाय उसकी भाषा को प्रभावित करता है।
किसी जाति विशेष में प्रयुक्त शब्दावली उसके कामकाज से जुड़ी होती है।

उदाहरण:

- लोहार जाति में "हथौड़ा", "निहाई", "पिघलाना" जैसे शब्द अधिक प्रचलित।
- किसान जाति में "हल", "बीज", "खेत", "सिंचाई" जैसे शब्द अधिक प्रयुक्त।

5️⃣ भाषा और जाति के आधार पर सामाजिक विभाजन (Social division based on language and caste)

कभी-कभी भाषा और जाति दोनों समाज में वर्ग विभाजन का कारण बन जाते हैं।
भाषा के आधार पर समूहों में भिन्नता और जाति के आधार पर ऊँच-नीच की भावना विकसित होती है।

उदाहरण:

- उच्च जातियाँ अपनी भाषा को "शुद्ध" मानती हैं।
- लोकभाषा बोलने वालों को "अशिक्षित" या "निम्न वर्ग" का समझा जाता है।

6️⃣ जातीय समुदायों में भाषा का संरक्षण (Language preservation in caste communities)

प्रत्येक जातीय समुदाय अपनी भाषा, बोली या उपभाषा को बनाए रखता है।
उसकी परंपराएँ, गीत, कहावतें और मुहावरे उसी भाषा में संरक्षित रहते हैं।

उदाहरण:

- ब्राह्मण समुदाय में संस्कृत श्लोकों का प्रयोग।
- यादव या जाट समुदाय में लोकगीतों और लोकबोलियों का उपयोग।

7️⃣ जातीय गतिशीलता और भाषा परिवर्तन (Caste mobility and language change)

जब कोई जाति सामाजिक रूप से ऊँचाई प्राप्त करती है, तो वह भाषा भी बदल लेती है — अर्थात वह "शुद्ध" या "मानक भाषा" का प्रयोग करने लगती है।

इसे समाजशास्त्र में "Sanskritization" कहा गया है (M.N. Srinivas के अनुसार)।

🔹 5. समाजभाषाविज्ञान के दृष्टिकोण से भाषा और जाति

समाजभाषाविज्ञान (Sociolinguistics) के अनुसार,
भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज की सामाजिक संरचना (social structure) का भी दर्पण है।

जाति समाज में भाषा के प्रयोग की दिशा, रूप और स्तर को प्रभावित करती है।
एक ही भाषा की विभिन्न **उपभाषाएँ (dialects)** जातियों और वर्गों के अनुसार भिन्न हो सकती हैं।

उदाहरण:

- हिन्दी की ब्रज, अवधी, भोजपुरी, हरियाणवी बोलियों में जातिगत विविधताएँ देखी जा सकती हैं।

6. भाषा और जाति के सामाजिक प्रभाव (Social Effects of Language and Caste)

क्षेत्र	प्रभाव
सामाजिक स्थिति	भाषा से जातीय प्रतिष्ठा जुड़ी रहती है
शिक्षा	उच्च जातियाँ अधिक शिक्षित, इसलिए उनकी भाषा अधिक मानक
संस्कृति	जातीय परंपराएँ भाषा में झलकती हैं
पहचान	भाषा से जातीय और सांस्कृतिक पहचान निर्मित होती है
परिवर्तन	सामाजिक गतिशीलता के साथ भाषा रूपांतरित होती है

7. उदाहरण (Examples in Indian Context)

जाति	प्रमुख भाषा/बोली	विशेषता
ब्राह्मण	संस्कृतनिष्ठ हिन्दी/संस्कृत	धार्मिक और औपचारिक भाषा
यादव	भोजपुरी, अवधी, हरियाणवी	लोकबोलियाँ, गीतप्रधान संस्कृति
राजपूत	राजस्थानी, ब्रज	वीरता और परंपराओं से जुड़ी भाषा
बनिया	हिन्दी, गुजराती, मारवाड़ी	व्यावसायिक और सौदेबाजी के शब्द
अनुसूचित जातियाँ	क्षेत्रीय बोलियाँ	सरल, लोकाभिव्यक्ति प्रधान भाषा

भाषा और जातीयता (Bhasha aur Jatiyata) – पूर्ण विवरण

1. प्रस्तावना (Introduction)

भाषा और जातीयता का संबंध समाजशास्त्र और समाजभाषाविज्ञान (Sociolinguistics) का एक महत्वपूर्ण विषय है।
जहाँ **भाषा (Language)** विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम है, वहीं **जातीयता (Ethnicity)** व्यक्ति की सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है।

दोनों के बीच गहरा अंतःसंबंध है —
भाषा किसी जातीय समूह की **संस्कृति, परंपरा और पहचान** का वाहक होती है।
इसीलिए कहा जाता है —

"भाषा जातीय पहचान का सबसे प्रभावशाली प्रतीक है।"

2. भाषा का अर्थ (Meaning of Language)

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचारों, अनुभवों, और भावनाओं को दूसरों तक पहुँचाता है।
यह केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि **संस्कृति, परंपरा और सामाजिक पहचान** की अभिव्यक्ति है।

उदाहरण: हिन्दी, तमिल, गुजराती, मराठी, बंगाली, पंजाबी आदि।

3. जातीयता का अर्थ (Meaning of Ethnicity / Jatiyata)

जातीयता (Jatiyata) शब्द 'जाति' से बना है, परंतु यह केवल जन्म आधारित सामाजिक विभाजन नहीं है।
जातीयता का अर्थ है — किसी समूह की **साझा सांस्कृतिक पहचान**, **भाषा**, **रीति-रिवाज**, **परंपरा**, और **इतिहास** से जुड़ी भावनात्मक एकता।

जातीयता उस भावना का नाम है जो किसी समुदाय को "हम" के रूप में एकीकृत करती है।

✳ जातीयता के मुख्य तत्व:

1. समान भाषा
2. समान संस्कृति और परंपरा
3. समान धर्म या विश्वास
4. समान भौगोलिक क्षेत्र
5. समान ऐतिहासिक अनुभव

4. भाषा और जातीयता का अंतःसंबंध (Interrelationship between Language and Ethnicity)

भाषा और जातीयता दोनों समाज के मूलभूत सांस्कृतिक घटक हैं।
भाषा किसी जातीय समूह की पहचान को संरक्षित, अभिव्यक्त और सशक्त बनाती है।
कई बार भाषा ही जातीयता का **मुख्य प्रतीक (core symbol)** बन जाती है।

1 भाषा जातीय पहचान का प्रतीक है (Language is the symbol of ethnic identity)

हर जातीय समूह अपनी विशिष्ट भाषा या बोली के माध्यम से पहचाना जाता है।
भाषा से ही जातीय समूह की संस्कृति, सोच और परंपरा झलकती है।

उदाहरण:

- बंगाली जातीयता → बंगाली भाषा
- पंजाबी जातीयता → पंजाबी भाषा
- मराठी जातीयता → मराठी भाषा
- तमिल जातीयता → तमिल भाषा

2 भाषा जातीय एकता का माध्यम है (Language unites the ethnic group)

साझी भाषा बोलने वाले लोगों में "हम" की भावना विकसित होती है।
यह जातीय एकता और सामूहिक पहचान को मजबूत करती है।

उदाहरण:
हिन्दीभाषी समुदाय, मराठीभाषी समुदाय, तमिलभाषी समुदाय — इन सबमें भाषा एकजुटता का भाव जगाती है।

3. भाषा जातीय संस्कृति की वाहक है (Language preserves ethnic culture)

भाषा के माध्यम से जातीय परंपराएँ, लोकगीत, कहावतें, लोककथाएँ और धार्मिक विश्वास पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होते हैं।

उदाहरण:
राजस्थानी लोकगीत, भोजपुरी लोककथाएँ, पंजाबी बोलियाँ — अपनी जातीय संस्कृति का संरक्षण करती हैं।

4. भाषा जातीय गर्व का प्रतीक है (Language as a symbol of ethnic pride)

हर जातीय समूह को अपनी भाषा पर गर्व होता है।
भाषा में ही उसका स्वाभिमान, इतिहास और गौरव झलकता है।

उदाहरण:

- तमिल समुदाय अपनी भाषा को "देवभाषा" मानता है।
- बंगाली समुदाय अपनी साहित्यिक परंपरा पर गर्व करता है।

5. जातीय संघर्षों में भाषा की भूमिका (Language in ethnic conflicts)

कई बार भाषा जातीय संघर्षों और राजनीतिक आंदोलनों का केंद्र बन जाती है।
क्योंकि भाषा केवल संचार का साधन नहीं, बल्कि पहचान का प्रतीक होती है।

उदाहरण:

- श्रीलंका में सिंहली और तमिल भाषा विवाद
- असम, मणिपुर, नागालैंड में भाषाई-जातीय आंदोलन
- भारत में हिन्दी बनाम क्षेत्रीय भाषाओं के संघर्ष

6. भाषा और जातीयता का राजनीतिक आयाम (Political aspect of Language and Ethnicity)

कई देशों और राज्यों में भाषा को जातीय पहचान और अधिकारों से जोड़ा गया है।
राजनीतिक पार्टियाँ और आंदोलन जातीय भाषा को "पहचान की राजनीति" के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

उदाहरण:

- "मराठी मानुस" आंदोलन (शिवसेना)
- "द्रविड़ आंदोलन" (तमिलनाडु)
- "अस्मिता आंदोलन" (उत्तर-पूर्व भारत)

7 भाषा जातीय सीमाओं को भी पार कर सकती है (Language can transcend ethnicity)

आधुनिक युग में शिक्षा, मीडिया और तकनीक ने भाषा को जातीय सीमाओं से आगे बढ़ा दिया है।
अब एक ही भाषा विभिन्न जातीय समूहों के बीच साझा पहचान का साधन बन रही है।

उदाहरण: हिन्दी और अंग्रेज़ी का राष्ट्रीय/वैश्विक स्तर पर उपयोग।

5. समाजभाषाविज्ञान (Sociolinguistic Perspective)

समाजभाषाविज्ञान (Sociolinguistics) के अनुसार —
भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि **सामाजिक पहचान (social identity)** का प्रतीक है।

जातीय समूह अपनी भाषा के माध्यम से समाज में अपनी उपस्थिति और प्रभाव स्थापित करते हैं।
कई बार **भाषाई विविधता (Linguistic diversity)** जातीय विविधता का संकेतक बन जाती है।

फिशमैन (Joshua Fishman) ने कहा है —
"Language is not just a tool of communication; it is a carrier of ethnic identity."
अर्थात् — "भाषा केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि जातीय पहचान की वाहक है।"

6. भाषा और जातीयता के उदाहरण (Examples of Language and Ethnicity)

जातीय समूह	भाषा	विशेषता

जातीय समूह	भाषा	विशेषता
तमिल जातीयता	तमिल	द्रविड़ संस्कृति और परंपरा की प्रतीक
मराठी जातीयता	मराठी	क्षेत्रीय अस्मिता और सांस्कृतिक गौरव
पंजाबी जातीयता	पंजाबी	लोकसंगीत और वीरता से जुड़ी
बंगाली जातीयता	बंगाली	साहित्य, कला और बौद्धिकता का प्रतीक
असमीया जातीयता	असमीया	उत्तर-पूर्व भारतीय पहचान का केंद्र

7. वैश्विक दृष्टिकोण (Global Perspective)

दुनिया के कई देशों में भाषा और जातीयता का गहरा संबंध है —

- **स्पेन में** — कातालोनिया और बास्क जातीय समूह अपनी भाषाओं के माध्यम से स्वतंत्र पहचान बनाए रखते हैं।
- **कनाडा में** — फ्रेंचभाषी (क्यूबेक) और इंग्लिशभाषी समुदायों के बीच भाषाई-जातीय विभाजन है।
- **श्रीलंका में** — तमिल और सिंहली समुदायों के बीच भाषा-आधारित संघर्ष हुआ।

UNIT-3

भाषा और वर्ग (Bhasha aur Varg) – पूर्ण विवरण

1. प्रस्तावना (Introduction)

भाषा और वर्ग का संबंध समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना से गहराई से जुड़ा हुआ है। **भाषा (Language)** मनुष्य के विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम है, जबकि **वर्ग (Class)** समाज में व्यक्ति की **आर्थिक, शैक्षणिक और सामाजिक स्थिति** का संकेतक है।

हर वर्ग के लोगों का भाषा प्रयोग अलग होता है —
किसी का उच्चारण, शब्द चयन, बोलने का तरीका, और अभिव्यक्ति का स्तर उनके सामाजिक वर्ग को दर्शाता है।

"भाषा समाज की संरचना का दर्पण है और वर्ग उस संरचना का स्वरूप।"

2. भाषा का अर्थ (Meaning of Language)

भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों, अनुभवों, भावनाओं और इच्छाओं को व्यक्त करता है।
यह केवल संचार का माध्यम नहीं बल्कि समाज के **सांस्कृतिक, आर्थिक और बौद्धिक स्तर** को भी प्रकट करती है।

3. वर्ग का अर्थ (Meaning of Class / Varg)

वर्ग (Varg) समाज में लोगों के बीच आर्थिक, शैक्षणिक, और व्यवसायिक स्थिति के आधार पर उत्पन्न **सामाजिक विभाजन** को कहते हैं।

समाज में वर्ग व्यक्ति की **आर्थिक स्थिति**, **शिक्षा**, **पेशा**, और **प्रतिष्ठा** के आधार पर निर्धारित होता है।

वर्ग के प्रमुख प्रकार:

1. उच्च वर्ग (Upper Class)
2. मध्य वर्ग (Middle Class)
3. निम्न वर्ग (Lower Class)

4. भाषा और वर्ग का अंतःसंबंध (Interrelationship between Language and Class)

भाषा और वर्ग का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है।
समाज के विभिन्न वर्ग अपनी स्थिति, शिक्षा और जीवनशैली के अनुसार भाषा का प्रयोग अलग-अलग ढंग से करते हैं।

अर्थात् — व्यक्ति का सामाजिक वर्ग उसकी भाषा शैली को प्रभावित करता है।

1. भाषा सामाजिक वर्ग की पहचान कराती है (Language reflects social class)

व्यक्ति की भाषा सुनकर उसके वर्ग का अनुमान लगाया जा सकता है।
उसके शब्द चयन, उच्चारण, व्याकरण और बोलने के तरीके से उसकी सामाजिक स्थिति झलकती है।

उदाहरण:

- शिक्षित वर्ग → शुद्ध, संस्कृतनिष्ठ और औपचारिक हिन्दी का प्रयोग
- श्रमिक वर्ग → सरल, स्थानीय बोली और लोकभाषा का प्रयोग

2. वर्ग भाषा के स्तर को निर्धारित करता है (Class determines language level)

समाज में ऊँचे वर्ग के लोग "मानक भाषा (Standard Language)" बोलते हैं,
जबकि निम्न वर्ग के लोग "लोकभाषा" या "बोली" का प्रयोग करते हैं।

उदाहरण:

- उच्च वर्ग → "मैं आज विद्यालय जा रहा हूँ।"
- निम्न वर्ग → "हम आज स्कूल जात हैं।"

3. शिक्षा और आर्थिक स्थिति का प्रभाव (Influence of education and economy)

शिक्षा और आर्थिक स्थिति व्यक्ति की भाषा को परिष्कृत बनाती है।
उच्च शिक्षित वर्ग की भाषा अधिक शुद्ध, व्याकरणिक और औपचारिक होती है।
गरीब या अशिक्षित वर्ग की भाषा अधिक सहज और स्थानीय शब्दों से भरी होती है।

4. वर्ग आधारित भाषा व्यवहार (Class-based language behavior)

हर वर्ग की अपनी भाषा व्यवहार की शैली होती है —
बातचीत का तरीका, शब्दों का प्रयोग, और भाषाई शिष्टाचार वर्ग के अनुसार बदलता है।

वर्ग	भाषा व्यवहार की विशेषता

वर्ग भाषा व्यवहार की विशेषता

उच्च वर्ग विनम्र, औपचारिक, मानक भाषा

मध्य वर्ग मिश्रित शैली – औपचारिक और बोलचाल की

निम्न वर्ग सीधी, अनौपचारिक, बोली प्रधान भाषा

5. भाषा के माध्यम से वर्गीय प्रतिष्ठा (Language as a status symbol)

कई बार भाषा "प्रतिष्ठा" या "सम्मान" का प्रतीक बन जाती है।
जो वर्ग अधिक प्रभावशाली या शिक्षित होता है, उसकी भाषा समाज में "मानक" बन जाती है।

उदाहरण:

- अंग्रेज़ी को उच्च वर्ग की भाषा माना जाता है।
- हिन्दी या क्षेत्रीय बोलियाँ आमजन की भाषा मानी जाती हैं।

6. भाषा में वर्गीय भेदभाव (Linguistic discrimination based on class)

कई बार भाषा के आधार पर सामाजिक भेदभाव भी देखने को मिलता है।
"अशुद्ध हिन्दी" या "गांव की बोली" बोलने वालों को "कम शिक्षित" या "निम्न वर्ग" का समझा जाता है।

यह वर्गीय असमानता का भाषाई रूप है।

7. समाज में वर्गीय भाषा परिवर्तन (Language change across classes)

जब निम्न वर्ग के लोग सामाजिक रूप से ऊपर उठते हैं, तो वे अपनी भाषा भी बदल लेते हैं।
यह प्रक्रिया समाजशास्त्र में **"Social Mobility"** कहलाती है।

उदाहरण:
कोई व्यक्ति जो पहले स्थानीय बोली बोलता था, शिक्षा और पद के साथ मानक हिन्दी या अंग्रेज़ी का प्रयोग करने लगता है।

5. समाजभाषाविज्ञान के दृष्टिकोण से भाषा और वर्ग

समाजभाषाविज्ञान (Sociolinguistics) भाषा और समाज के संबंधों का अध्ययन करता है। इसके अनुसार, भाषा व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का दर्पण है।

विलियम लैबोव (William Labov) ने कहा था —

"Language varies systematically with social class."
अर्थात् — "भाषा सामाजिक वर्ग के अनुसार व्यवस्थित रूप से बदलती है।"

6. उदाहरण (Examples in Indian Context)

वर्ग	भाषा की विशेषता	उदाहरण
उच्च वर्ग	अंग्रेज़ी या मानक हिन्दी	अधिकारी, डॉक्टर, व्यापारी
मध्य वर्ग	मिश्रित हिन्दी-अंग्रेज़ी (Hinglish)	शिक्षक, कर्मचारी, छात्र
निम्न वर्ग	क्षेत्रीय बोली या लोकभाषा	किसान, मजदूर, ग्रामीण

7. भाषा और वर्गीय विभाजन के परिणाम (Consequences of language-class division)

1. **सामाजिक दूरी का निर्माण** — वर्गों के बीच संवाद में बाधा आती है।
2. **भाषाई भेदभाव** — कुछ भाषाएँ "ऊँची" और कुछ "नीची" मानी जाने लगती हैं।
3. **शिक्षा में असमानता** — भाषा के कारण उच्च वर्ग को अधिक अवसर मिलते हैं।
4. **संस्कृतिक विभाजन** — भाषा वर्गों के बीच सांस्कृतिक अंतर को गहरा करती है।

8. आधुनिक युग में परिवर्तन (Modern Changes)

आज के वैश्वीकरण और तकनीकी युग में भाषा और वर्ग का अंतर कम हो रहा है। मीडिया, इंटरनेट और शिक्षा ने विभिन्न वर्गों को एक समान भाषाई मंच पर ला दिया है। अब "हिंग्लिश" जैसी भाषाएँ वर्गीय सीमाओं को तोड़ रही हैं।

🔷 व्यक्ति, समाज और भाषा-वर्ग (Vyakti, Samaj aur Bhasha-Varg) – पूर्ण विवरण

🔹 1. प्रस्तावना (Introduction)

भाषा, व्यक्ति और समाज — तीनों एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं।
भाषा मनुष्य की **अभिव्यक्ति** का साधन है, समाज उसकी **संरचना** है, और व्यक्ति उस समाज का **अभिन्न अंग**।

भाषा न केवल संचार का माध्यम है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक, आर्थिक और वर्गीय व्यवस्था का **प्रतिबिंब (mirror)** भी है।
इसलिए जब हम "व्यक्ति, समाज और भाषा-वर्ग" की बात करते हैं, तो हम यह समझते हैं कि **भाषा व्यक्ति के व्यवहार, समाज की संरचना और वर्गीय विभाजन से कैसे प्रभावित होती है।**

2. व्यक्ति (Vyakti)

🔸 अर्थ :

व्यक्ति समाज की मूल इकाई है।
वह अपनी **भाषा**, **विचारों**, और **व्यवहार** के माध्यम से समाज से जुड़ता है।

"व्यक्ति भाषा के माध्यम से समाज में अपनी पहचान बनाता है।"

🔸 भाषा से व्यक्ति का संबंध:

1. व्यक्ति भाषा के माध्यम से अपने विचार व्यक्त करता है।
2. व्यक्ति की मातृभाषा उसकी पहचान का प्रमुख आधार होती है।
3. व्यक्ति का भाषा-व्यवहार उसकी शिक्षा, परिवेश और वर्ग को दर्शाता है।
4. व्यक्ति की भाषाई क्षमता सामाजिक स्थिति से प्रभावित होती है।

🔹 3. समाज (Samaj)

🔸 अर्थ :

समाज एक ऐसा संगठन है जहाँ व्यक्ति समूहों में रहकर **सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिक और नैतिक** संबंध स्थापित करता है।

समाज में हर व्यक्ति एक **सामाजिक भूमिका (social role)** निभाता है — जैसे शिक्षक, विद्यार्थी, व्यापारी, मजदूर आदि।
इन भूमिकाओं के अनुसार ही उसका भाषा व्यवहार बदलता है।

□ भाषा और समाज का संबंध:

1. समाज में प्रयुक्त भाषा समाज की संरचना और संस्कृति को दर्शाती है।
2. भाषा समाज के विचारों, मूल्यों और परंपराओं का वाहक है।
3. समाज में विभिन्न **वर्गों**, **जातियों**, और **समुदायों** के अनुसार भाषा में विविधता पाई जाती है।
4. समाज भाषा को मानकीकृत (standardize) या प्रतिष्ठित भी करता है।

□ 4. भाषा-वर्ग (Bhasha-Varg)

□ अर्थ :

भाषा-वर्ग का अर्थ है — समाज में **भाषाई विविधता और सामाजिक वर्गों (social classes)** का परस्पर संबंध।
अर्थात्, समाज के विभिन्न वर्ग अपनी स्थिति, शिक्षा, संस्कृति और पेशे के अनुसार भिन्न भाषा-शैली का प्रयोग करते हैं।

भाषा-वर्ग समाज के वर्गीय विभाजन का भाषाई रूप है।

□ 5. व्यक्ति, समाज और भाषा-वर्ग का अंतर्संबंध (Interrelationship)

तीनों — **व्यक्ति, समाज और भाषा-वर्ग** — परस्पर जुड़े हुए हैं।
भाषा व्यक्ति की पहचान है, समाज उसकी पृष्ठभूमि, और वर्ग उसकी स्थिति को प्रकट करता है।

✳□ (क) व्यक्ति और भाषा का संबंध

- व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत भाषा-शैली (idiosyncratic speech) रखता है।

- उसके बोलने का तरीका, शब्द चयन, और व्याकरणिक दक्षता उसकी शिक्षा और वर्ग पर निर्भर करती है।

उदाहरण:
एक ग्रामीण व्यक्ति की भाषा एक शहरी व्यक्ति से भिन्न होगी।

✳ (ख) समाज और भाषा का संबंध

- समाज भाषा को परंपरा, संस्कृति और शिक्षा से जोड़ता है।
- हर समाज की अपनी बोली, कहावतें और अभिव्यक्तियाँ होती हैं।
- भाषा समाज के मूल्यों और विचारधारा को स्थिर रखती है।

उदाहरण:
राजस्थान में "मारवाड़ी" बोली समाज की पहचान है, जबकि बिहार में "मैथिली" या "भोजपुरी"।

✳ (ग) वर्ग और भाषा का संबंध

- उच्च वर्ग, मध्य वर्ग और निम्न वर्ग की भाषा में अंतर पाया जाता है।
- यह अंतर शिक्षा, पद और आर्थिक स्थिति के कारण उत्पन्न होता है।
- उच्च वर्ग "मानक भाषा" या "अंग्रेज़ी मिश्रित हिन्दी" बोलता है,
  जबकि निम्न वर्ग स्थानीय बोली या सरल हिन्दी का प्रयोग करता है।

उदाहरण:

- उच्च वर्ग: "आप कहाँ जा रहे हैं?"
- निम्न वर्ग: "तू कहाँ जात है?"

✳ (घ) व्यक्ति-समाज-वर्ग का समन्वय (Integration of Individual, Society & Class through Language)

भाषा वह माध्यम है जो व्यक्ति और समाज को जोड़ती है और वर्गीय अंतर को प्रकट करती है। भाषा न केवल व्यक्ति की पहचान बनाती है, बल्कि समाज के वर्गीय स्वरूप को भी अभिव्यक्त करती है।

इस प्रकार:

- व्यक्ति भाषा के माध्यम से समाज में स्थान प्राप्त करता है।
- समाज भाषा के माध्यम से संस्कृति का संचार करता है।
- वर्ग भाषा के माध्यम से अपनी पहचान और प्रतिष्ठा बनाए रखता है।

6. समाजभाषाविज्ञान के दृष्टिकोण से विश्लेषण (Sociolinguistic Viewpoint)

समाजभाषाविज्ञान (Sociolinguistics) के अनुसार —
भाषा, व्यक्ति, समाज और वर्ग — एक-दूसरे पर निर्भर हैं।

विलियम लैबोव (William Labov) और **बर्नस्टीन (Basil Bernstein)** ने बताया कि —
भाषा की विविधता समाज के वर्गीय और सांस्कृतिक अंतर को दर्शाती है।

- **लैबोव:** भाषा सामाजिक वर्ग के अनुसार बदलती है।
- **बर्नस्टीन:** शिक्षा और वर्ग भाषा-कोड (language code) को निर्धारित करते हैं — जैसे *restricted code* (सीमित) और *elaborated code* (विस्तारित)।

7. भारतीय संदर्भ में उदाहरण (Examples from Indian Society)

वर्ग / व्यक्ति	प्रयुक्त भाषा	उदाहरण
उच्च वर्ग	मानक हिन्दी, अंग्रेज़ी	अधिकारी, व्यापारी, शिक्षित वर्ग
मध्य वर्ग	हिंग्लिश (Hindi + English)	शिक्षक, विद्यार्थी, कर्मचारी
निम्न वर्ग	बोली या लोकभाषा	मजदूर, किसान, ग्रामीण समाज

---

8. भाषा-वर्ग के परिणाम (Consequences of Language-Class Relation)

1. **भाषाई भेदभाव** — कुछ भाषाएँ या बोलियाँ "नीची" या "अशुद्ध" मानी जाती हैं।
2. **शिक्षा में असमानता** — भाषा की वजह से वर्गीय अंतर बना रहता है।
3. **सांस्कृतिक दूरी** — भाषा वर्गों के बीच दूरी और पहचान का प्रतीक बन जाती है।
4. **सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility)** — व्यक्ति वर्ग बदलते समय अपनी भाषा भी बदलता है।

9. आधुनिक युग में परिवर्तन (Modern Trends)

आज तकनीक, मीडिया और शिक्षा के कारण भाषा-वर्ग का अंतर घट रहा है।
मोबाइल, टीवी, सोशल मीडिया ने सभी वर्गों को एक समान भाषाई मंच पर ला दिया है।
अब "हिंग्लिश" या "मिश्रित हिन्दी" हर वर्ग में सामान्य हो गई है।

भाषा और संस्कृति (Bhasha aur Sanskriti) – पूर्ण विवरण

1. प्रस्तावना (Introduction)

भाषा और संस्कृति का संबंध अत्यंत गहरा और अविभाज्य है।
भाषा (Language) वह माध्यम है जिसके द्वारा संस्कृति (Culture) की **अभिव्यक्ति, संरक्षण और प्रसार** होता है।

भाषा न केवल संचार का साधन है, बल्कि यह समाज की **संस्कृति, परंपरा, विचारधारा, आचार-विचार और जीवन शैली** को भी अभिव्यक्त करती है।
इस प्रकार कहा जा सकता है कि **भाषा संस्कृति का दर्पण (mirror) और वाहक (carrier)** दोनों है।

"भाषा संस्कृति की आत्मा है।"

2. भाषा का अर्थ (Meaning of Language)

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को दूसरों तक पहुँचाता है।
यह व्यक्ति और समाज के बीच संवाद का सेतु है।

भाषा के प्रमुख कार्य:

1. विचारों की अभिव्यक्ति
2. समाज में संवाद स्थापित करना
3. ज्ञान और परंपरा का संचार
4. सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण

3. संस्कृति का अर्थ (Meaning of Culture)

संस्कृति (Sanskriti) शब्द संस्कृत धातु *'संस्कृ'* से बना है, जिसका अर्थ है "संस्कारित" या "परिष्कृत"।

संस्कृति किसी समाज की **जीवन शैली, परंपराएँ, मूल्य, कला, धर्म, भाषा, वेशभूषा, और रीति-रिवाजों** का समूह है।

संस्कृति समाज का आत्मिक स्वरूप है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार —

"संस्कृति मनुष्य के विचार, आचरण और जीवन के उच्च मूल्यों की अभिव्यक्ति है।"

4. भाषा और संस्कृति का अंतर्संबंध (Interrelationship between Language and Culture)

भाषा और संस्कृति एक-दूसरे पर निर्भर हैं।
भाषा संस्कृति को व्यक्त करती है, और संस्कृति भाषा को आकार देती है।

✳ (क) भाषा संस्कृति की अभिव्यक्ति है

भाषा के माध्यम से समाज अपनी परंपराएँ, धर्म, लोककथाएँ, गीत, और साहित्य का संचार करता है।
भाषा के बिना संस्कृति का अस्तित्व संभव नहीं है।

उदाहरण:
भारतीय संस्कृति में "नमस्ते" शब्द केवल अभिवादन नहीं बल्कि "सम्मान" की भावना का प्रतीक है।

✳ (ख) संस्कृति भाषा को प्रभावित करती है

किसी समाज की संस्कृति उसकी भाषा में झलकती है।
संस्कृति के अनुसार भाषा में नए शब्द, मुहावरे और अभिव्यक्तियाँ विकसित होती हैं।

उदाहरण:

- हिंदी में "राम-राम" कहना धार्मिक संस्कृति को दर्शाता है।
- पश्चिमी संस्कृति में "Hello" कहना सामान्य अभिवादन है।

✳ (ग) भाषा संस्कृति का संवाहक (Carrier) है

भाषा के माध्यम से संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती है।
लोकगीत, लोककथाएँ, शास्त्र, साहित्य, और धार्मिक ग्रंथ संस्कृति के वाहक हैं।

उदाहरण:
वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत आदि भारतीय संस्कृति को आज तक जीवित रखे हुए हैं।

✳ (घ) भाषा संस्कृति के संरक्षण का साधन है

भाषा संस्कृति को **लुप्त होने से बचाती है**।
जब कोई भाषा समाप्त होती है, तो उसकी संस्कृति भी धीरे-धीरे विलुप्त हो जाती है।

उदाहरण:
संस्कृत भाषा के लुप्त होने से अनेक प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराएँ कमजोर हो गईं।

✳ (ङ) भाषा सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है

हर संस्कृति की अपनी भाषा होती है, जो उसकी पहचान बन जाती है।
भाषा = संस्कृति की आत्मा।

उदाहरण:

- तमिल संस्कृति – तमिल भाषा
- बंगाली संस्कृति – बांग्ला भाषा
- पंजाबी संस्कृति – पंजाबी भाषा

---

5. समाजभाषाविज्ञान के दृष्टिकोण से भाषा और संस्कृति

समाजभाषाविज्ञान (Sociolinguistics) यह मानता है कि भाषा सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में विकसित होती है।
भाषा समाज की संस्कृति को **प्रतिबिंबित** (reflect) करती है।

एडवर्ड सपिर (Edward Sapir) और **बेंजामिन ली व्हॉर्फ (Benjamin Lee Whorf)** के अनुसार —

"भाषा विचारों और सांस्कृतिक अनुभवों को नियंत्रित करती है।"

इसे **Sapir-Whorf Hypothesis** कहा जाता है।
इस सिद्धांत के अनुसार, हमारी भाषा ही हमारे सोचने और समझने के तरीके को आकार देती है।

उदाहरण:
हिंदी में "सत्संग", "धर्म", "कर्म", "संस्कार" जैसे शब्द भारतीय सांस्कृतिक जीवन-दृष्टि को व्यक्त करते हैं।

---

6. भारतीय संदर्भ में भाषा और संस्कृति

भारत विविध भाषाओं और संस्कृतियों का देश है।
प्रत्येक भाषा एक विशिष्ट संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है।

भाषा	संस्कृति का स्वरूप
हिंदी	उत्तर भारतीय सांस्कृतिक परंपरा
तमिल	द्रविड़ संस्कृति
बंगाली	साहित्यिक और भावनात्मक संस्कृति
पंजाबी	वीरता और उत्सव प्रधान संस्कृति

भाषा संस्कृति का स्वरूप

मराठी संत परंपरा और समाज सुधार आंदोलन

भारत की भाषाएँ उसकी एकता में विविधता (Unity in Diversity) का प्रमाण हैं।

---

7. भाषा और संस्कृति के प्रमुख कार्य (Functions of Language in Culture)

1. **संप्रेषण (Communication)** — विचारों का आदान-प्रदान।
2. **संरक्षण (Preservation)** — परंपराओं का संरक्षण।
3. **प्रसार (Transmission)** — संस्कृति का प्रसार एक पीढ़ी से दूसरी तक।
4. **पहचान (Identity)** — सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान का निर्माण।
5. **सामाजिक एकता (Social Unity)** — भाषा समाज को एक सूत्र में बाँधती है।

---

8. भाषा और संस्कृति के बीच अंतर (Difference between Language and Culture)

पहलू	भाषा	संस्कृति
परिभाषा	विचार अभिव्यक्ति का माध्यम	जीवन शैली, परंपरा और मूल्य
स्वरूप	मौखिक/लिखित प्रतीक प्रणाली	सामाजिक आचार-विचार का समूह
कार्य	संचार और संवाद	समाज का निर्माण और दिशा
संबंध	संस्कृति को व्यक्त करती है	भाषा के माध्यम से जीवित रहती है

---

9. आधुनिक युग में भाषा और संस्कृति

वैश्वीकरण (Globalization) और तकनीकी प्रगति के कारण भाषा और संस्कृति दोनों में परिवर्तन आया है।
अंग्रेज़ी और डिजिटल भाषा के प्रसार से पारंपरिक भाषाएँ और संस्कृतियाँ प्रभावित हो रही हैं।

फिर भी, **स्थानीय भाषाओं और लोक-संस्कृति** के पुनर्जागरण (revival) का दौर भी चल रहा है। सरकारें, शिक्षण संस्थान और समाज भाषा-संरक्षण के प्रयास कर रहे हैं।

UNIT-4

भाषा: सर्वोच्चता, स्वरूप और प्रविधि (Bhasha: Sarvochchata, Swaroop aur Pravidhi)

---

1. प्रस्तावना (Introduction)

भाषा मानव जीवन का सर्वोच्च साधन है।
यह केवल विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि **सांस्कृतिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास** का आधार भी है।

भाषा की **सर्वोच्चता (Supremacy)**, उसका **स्वरूप (Form)** और **प्रविधि (Method / Technique)** मानव समाज के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

"भाषा मानव की सर्वोच्च अभिव्यक्ति और सामाजिक चेतना का माध्यम है।"

---

2. भाषा की सर्वोच्चता (Bhasha Ki Sarvochchata / Supremacy of Language)

भाषा की सर्वोच्चता कई कारणों से सिद्ध होती है:

1. **संवेदनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति**
   भाषा मनुष्य को अपने विचारों, भावनाओं, ज्ञान और अनुभव को व्यक्त करने का सर्वोत्तम साधन देती है।
2. **सांस्कृतिक संरक्षण**
   भाषा संस्कृति, परंपरा और इतिहास को पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रखती है।
3. **ज्ञान और विज्ञान का प्रसार**
   विज्ञान, तकनीक, शिक्षा और साहित्य भाषा के माध्यम से ही समाज में फैलते हैं।

4. **सामाजिक एकता**
   भाषा समाज के विभिन्न वर्गों और समुदायों को जोड़ती है।
5. **राजनीतिक और नैतिक प्रभाव**
   भाषा विचारधारा और समाज की नीति को प्रभावित करती है।

उदाहरण:
संस्कृत भाषा की साहित्यिक श्रेष्ठता, हिंदी की राष्ट्रीय एकता में भूमिका।

---

3. भाषा का स्वरूप (Bhasha Ka Swaroop / Form of Language)

भाषा का स्वरूप उसके **भाषाई घटकों** और **संरचना** में व्यक्त होता है।
भाषा के स्वरूप को समझने के लिए इसके मुख्य घटक देखें:

1. ध्वनि (Phonetics / Sound)

भाषा के मूल तत्व।
मानव मुख से उत्पन्न ध्वनि शब्दों और उच्चारण का आधार है।

उदाहरण:
'क', 'ख', 'ग', 'घ' आदि व्यंजन; 'अ', 'आ', 'इ', 'ई' स्वर।

---

2. शब्द (Word)

ध्वनि से बने अर्थपूर्ण घटक।
शब्द भाषा की **सूचना और अभिव्यक्ति इकाई** है।

उदाहरण:
'विद्यालय', 'भविष्य', 'ज्ञान'।

---

3. वाक्य (Sentence)

शब्दों का समूह जो पूर्ण अर्थ व्यक्त करता है।

उदाहरण:
'हम स्कूल जा रहे हैं।'

□ 4. व्याकरण (Grammar)

भाषा का नियम और ढांचा।
व्याकरण शब्दों को जोड़कर अर्थपूर्ण वाक्य बनाने का मार्गदर्शन करता है।

उदाहरण:
संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आदि।

□ 5. शैली (Style)

भाषा की अभिव्यक्ति का तरीका।
शैली साहित्यिक, संवादात्मक, औपचारिक या आम बोलचाल में भिन्न होती है।

उदाहरण:

- औपचारिक: 'आप कहाँ जा रहे हैं?'
- बोलचाल: 'तुम कहाँ जा रहे हो?'

□ 4. भाषा की प्रविधि (Bhasha Ki Pravidhi / Method / Technique of Language)

भाषा सीखने और प्रयोग करने के विभिन्न तरीके हैं। इसे हम **भाषा की प्रविधि** कहते हैं।

□ 1. मौखिक प्रविधि (Oral Method)

- भाषा की सुनने और बोलने की क्षमता विकसित करती है।
- संवाद, वार्तालाप और कहानियों के माध्यम से।

उदाहरण:
शिक्षक का व्याख्यान, कथा-कहानियाँ, लोकगीत।

□ 2. लिखित प्रविधि (Written Method)

- भाषा की पढ़ाई और लेखन क्षमता विकसित करती है।
- अक्षर, शब्द और वाक्य निर्माण के अभ्यास के माध्यम से।

उदाहरण:
निबंध लेखन, पत्र लेखन, साहित्य रचना।

□ 3. शाब्दिक प्रविधि (Lexical Method)

- शब्दों और उनके अर्थ को जानने और याद करने की प्रविधि।
- शब्दावली (Vocabulary) बढ़ाने के लिए उपयोगी।

उदाहरण:
शब्दकोश का प्रयोग, पर्यायवाची और विलोम शब्दों का अभ्यास।

□ 4. संवादात्मक प्रविधि (Communicative Method)

- भाषा का प्रयोग वास्तविक जीवन में संवाद करने के लिए।
- सुनना, बोलना, पूछना, समझना और जवाब देना।

उदाहरण:
कक्षा में प्रश्न-उत्तर, समूह चर्चा, प्रस्तुति।

□ 5. साहित्यिक प्रविधि (Literary Method)

- भाषा का प्रयोग साहित्य, कविता और कहानी में।
- भाषा की रचनात्मकता और अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करता है।

उदाहरण:

- हिंदी साहित्य: तुलसीदास, प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त।
- आधुनिक कविता और कहानी लेखन।

---

5. भाषा की विशेषताएँ (Features of Language)

1. **संचार का माध्यम (Medium of Communication)**
2. **विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति (Expression of Thoughts & Feelings)**
3. **संस्कृति और समाज का वाहक (Carrier of Culture & Society)**
4. **सृजनात्मक और अनुकूलनीय (Creative & Adaptive)**
5. **व्याकरणिक संरचना (Grammar Structure)**
6. **विस्तारित अर्थ और प्रतीकात्मकता (Extended Meaning & Symbolism)**

---

6. भाषा का महत्व (Importance of Language)

1. **सामाजिक पहचान** — व्यक्ति और समाज की पहचान।
2. **सांस्कृतिक संरक्षण** — परंपरा, रीति-रिवाज और ज्ञान।
3. **ज्ञान का संवाहक** — शिक्षा, विज्ञान और तकनीक।
4. **सामाजिक एकता** — समाज को जोड़ने का माध्यम।
5. **रचनात्मकता और साहित्य** — मानव सृजनात्मकता का माध्यम।

भाषा नमूनों का सर्वोच्चपन (Bhasha Namuno Ka Sarvochchata)

---

1. प्रस्तावना (Introduction)

भाषा नमूने (Language Samples) किसी भाषा की **विशिष्टता, संरचना और उपयोग** को समझने का माध्यम हैं।
जब हम किसी भाषा के नमूनों का अध्ययन करते हैं, तो हम यह जान पाते हैं कि कौन सा नमूना **सर्वोच्च (Supreme)** है, अर्थात् **सबसे प्रभावी, सटीक और सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण**।

भाषा के सर्वोच्च नमूने समाज और संस्कृति में **भाषा की श्रेष्ठता और प्रभाव** को दर्शाते हैं।

"भाषा नमूने भाषा की सर्वोच्चता, शुद्धता और प्रभावशीलता का परिचायक होते हैं।"

---

2. भाषा नमूने क्या हैं? (What are Language Samples)

भाषा नमूने ऐसे **भाषाई उदाहरण, वाक्य, संवाद, साहित्यिक अंश या बोली के हिस्से** होते हैं, जिन्हें भाषा की संरचना और प्रयोग को समझने के लिए चुना जाता है।

भाषा नमूनों के प्रकार

1. **मौखिक नमूने (Oral Samples)**
   - वार्तालाप, भाषण, गाने, कहानी सुनाना।
   - उदाहरण: शिक्षक का व्याख्यान, लोकगीत।
2. **लिखित नमूने (Written Samples)**
   - लेख, निबंध, कविता, कहानी।
   - उदाहरण: महाकाव्य, पत्र, समाचार लेख।
3. **सांस्कृतिक नमूने (Cultural Samples)**
   - कहावतें, मुहावरे, लोककथाएँ।
   - उदाहरण: "नाच न जाने आँगन टेढ़ा।"
4. **प्राकृतिक और बोली नमूने (Natural / Dialect Samples)**
   - क्षेत्रीय बोली और स्थानीय भाषा प्रयोग।
   - उदाहरण: भोजपुरी, राजस्थानी, तमिल, मराठी के वाक्य।

❓ 3. सर्वोच्चता का अर्थ (Meaning of Supremacy in Language Samples)

भाषा नमूनों की **सर्वोच्चता (Supremacy)** से तात्पर्य है —

- **भाषाई शुद्धता (Linguistic Purity)**
- **सटीक अर्थ प्रेषण (Accurate Meaning Transmission)**
- **सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव (Social & Cultural Impact)**
- **साहित्यिक और शैक्षणिक मान्यता (Literary & Educational Recognition)**

ऐसे नमूने भाषा की **श्रेष्ठ अभिव्यक्ति और प्रभावशीलता** को दर्शाते हैं।

🔍 4. भाषा नमूनों की विशेषताएँ (Characteristics of Language Samples)

1. **शुद्धता (Purity)**
   - शब्दों और व्याकरण में शुद्धता हो।
   - उदाहरण: संस्कृत और मानक हिंदी के शुद्ध वाक्य।
2. **स्पष्टता (Clarity)**
   - संदेश या भाव स्पष्ट रूप से व्यक्त हो।
3. **सामाजिक उपयोगिता (Social Utility)**
   - समाज और संस्कृति में मान्यता प्राप्त हों।
4. **साहित्यिक मूल्य (Literary Value)**
   - रचनात्मक और सृजनात्मक हो।
5. **स्थायित्व (Permanence)**
   - समय के साथ महत्व खोने न पाए।

📜 5. सर्वोच्च भाषा नमूनों के प्रकार (Types of Supreme Language Samples)

📖 1. शास्त्रीय नमूने (Classical Samples)

- प्राचीन ग्रंथ और साहित्यिक कृतियाँ।
- उदाहरण:

- संस्कृत के वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत
- हिंदी के तुलसीदास, सूरदास

□ 2. मानक और औपचारिक नमूने (Standard / Formal Samples)

- सरकारी, शैक्षणिक और औपचारिक प्रयोजन के लिए।
- उदाहरण:
  - शासकीय पत्र, शिक्षण सामग्री, समाचार

□ 3. बोली और क्षेत्रीय नमूने (Dialect / Regional Samples)

- क्षेत्रीय संस्कृति और भाषा के प्रतिनिधि।
- उदाहरण:
  - भोजपुरी, राजस्थानी, मराठी के लोकगीत और कहावतें

□ 4. संवादात्मक नमूने (Communicative Samples)

- दैनिक जीवन और संवाद के लिए प्रभावी नमूने।
- उदाहरण:
  - अभिवादन, परिचय, संवाद अभ्यास

□ 6. भाषा नमूनों की सर्वोच्चता के कारण (Reasons for Supremacy of Language Samples)

1. **ज्ञान और सूचना का संवाहक (Carrier of Knowledge & Information)**
2. **संस्कृति और परंपरा का संरक्षण (Preservation of Culture & Tradition)**
3. **सामाजिक और शैक्षणिक प्रभाव (Social & Educational Impact)**
4. **साहित्यिक मान्यता (Literary Recognition)**
5. **भाषा की स्थिरता और विकास में योगदान (Contribution to Stability & Development of Language)**

---

7. भारतीय संदर्भ में भाषा नमूनों की सर्वोच्चता

भारत में कई भाषाओं और उनके नमूनों ने समाज और संस्कृति में सर्वोच्च स्थान पाया है:

भाषा	सर्वोच्च नमूने	विशेषता
संस्कृत	वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण	शुद्धता, साहित्यिक मूल्य
हिंदी	तुलसीदास की रामचरितमानस	साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रभाव
तमिल	तिरुक्कुराल	नैतिक शिक्षा और साहित्यिक श्रेष्ठता
बंगाली	रवींद्रनाथ टैगोर की रचनाएँ	भावनात्मक और साहित्यिक मूल्य

भाषा नमूनों का विशेषण (Bhasha Namuno Ka Viseshan)

---

1. प्रस्तावना (Introduction)

भाषा नमूने (Language Samples) समाज, संस्कृति और साहित्य के अभिव्यक्तिक माध्यम हैं। जब हम भाषा नमूनों का अध्ययन करते हैं, तो उनके **विशेष गुण, पहचान और महत्व** को समझना आवश्यक होता है।
भाषा नमूनों का विशेषण उन विशेषताओं, गुणों और मानकों को बताता है जो उन्हें **विशिष्ट और श्रेष्ठ** बनाते हैं।

"भाषा नमूनों का विशेषण उनके मूल्य, प्रभाव और उपयोगिता को परिभाषित करता है।"

---

2. भाषा नमूनों का अर्थ (Meaning of Language Samples)

भाषा नमूने ऐसे **भाषाई उदाहरण, वाक्य, संवाद, साहित्यिक अंश, बोली या मुहावरे** होते हैं, जिन्हें भाषा की संरचना, शैली और प्रभाव को समझने के लिए चुना जाता है।

उदाहरण:

- शास्त्रीय ग्रंथ के उद्धरण
- लोककथा या लोकगीत
- दैनिक जीवन में प्रयुक्त संवाद

---

3. भाषा नमूनों के विशेषण (Characteristics / Attributes of Language Samples)

भाषा नमूनों के विशेषण उन्हें अन्य भाषाई प्रयोगों से अलग पहचान देते हैं।
मुख्य विशेषण निम्नलिखित हैं:

---

1. शुद्धता (Purity)

- नमूने में **शुद्ध व्याकरण और शब्द चयन** होना चाहिए।
- यह नमूने को भाषा के सर्वोत्तम उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करता है।

उदाहरण:
"विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।" (संस्कृत श्लोक)

---

2. स्पष्टता (Clarity)

- नमूने का अर्थ **सुस्पष्ट और समझने योग्य** होना चाहिए।
- अस्पष्ट भाषा का नमूना प्रभावशाली नहीं माना जाता।

उदाहरण:
"हम अपने कार्य में ईमानदार रहें।"

---

3. साहित्यिक मूल्य (Literary Value)

- नमूने में **साहित्यिक सुंदरता, अलंकार और भावनात्मक प्रभाव** होना चाहिए।
- यह विशेषण नमूने को साहित्यिक अध्ययन के योग्य बनाता है।

उदाहरण:

- तुलसीदास की **रामचरितमानस**
- रवींद्रनाथ टैगोर की **गीतांजलि**

---

4 सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव (Cultural & Social Impact)

- नमूना समाज और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता हो।
- भाषा और समाज की **परंपरा और मूल्य** को दर्शाता हो।

उदाहरण:

- "नाच न जाने आँगन टेढ़ा।" — ग्रामीण समाज की कहावत
- "सत्संग से बड़ा कोई उपदेश नहीं।" — धार्मिक संस्कृति का नमूना

---

5 स्थायित्व और मान्यता (Permanence & Recognition)

- नमूना समय के साथ महत्व खोने न पाए।
- समाज और साहित्य में इसकी मान्यता हो।

उदाहरण:

- महाभारत और रामायण के उद्धरण आज भी प्रभावशाली हैं।

---

6 प्रभावशीलता (Effectiveness)

- नमूना **अभिव्यक्तिशील और प्रभावपूर्ण** हो।
- श्रोता या पाठक पर lasting impression छोड़ता हो।

उदाहरण:

- "सत्य ही ईश्वर है।" — नैतिक और प्रभावी संदेश

7️⃣ रचनात्मकता (Creativity)

- नमूने में भाषा की **सृजनात्मकता और नवीनता** झलकती हो।
- नए शब्द, मुहावरे या अलंकार का प्रयोग इसे विशेष बनाता है।

उदाहरण:

- "ज्योतिर्मय जीवन का हर क्षण अमूल्य है।"

8️⃣ प्रासंगिकता (Relevance)

- नमूना **वर्तमान संदर्भ और उद्देश्य** के अनुसार उपयुक्त होना चाहिए।
- सामाजिक, शैक्षणिक या साहित्यिक प्रयोग में उपयोगी हो।

📌 4. भाषा नमूनों के प्रकार और उनके विशेषण

प्रकार	विशेषण
शास्त्रीय नमूने	शुद्धता, स्थायित्व, साहित्यिक मूल्य
मानक और औपचारिक नमूने	स्पष्टता, प्रभावशीलता, प्रासंगिकता
बोली और क्षेत्रीय नमूने	सांस्कृतिक प्रभाव, सामाजिक पहचान
संवादात्मक नमूने	स्पष्टता, प्रभावशीलता, रचनात्मकता

भाषा के नवीन प्रयोग (Bhasha Ke Navin Prayog)

---

1. प्रस्तावना (Introduction)

भाषा मानव जीवन का मुख्य संचार माध्यम है।
समय के साथ समाज, संस्कृति और तकनीकी प्रगति के कारण भाषा में **नवीन प्रयोग (New Uses / Innovations in Language)** देखने को मिलते हैं।

नवीन प्रयोग से तात्पर्य है —

भाषा के ऐसे प्रयोग जो पारंपरिक ढांचे से अलग हों, नए शब्द, मुहावरे, शैली या तकनीक के माध्यम से संवाद स्थापित करें।

भाषा का नवीन प्रयोग समाज, शिक्षा, साहित्य और तकनीक में **सृजनात्मकता, प्रभाव और प्रासंगिकता** बढ़ाता है।

---

2. भाषा के नवीन प्रयोग का अर्थ (Meaning of New Uses of Language)

भाषा के नवीन प्रयोग वे हैं जिनमें:

1. नए शब्दों या शब्द-समूह का निर्माण हो।
2. आधुनिक संदर्भ और तकनीक के अनुसार भाषा बदलती हो।
3. संवाद, साहित्य या संचार में नए रूपों का उपयोग हो।
4. भाषा समाज और संस्कृति के अनुसार विकसित होती रहे।

उदाहरण:

- सोशल मीडिया भाषा: LOL, OMG, Selfie
- आधुनिक हिंदी में अंग्रेज़ी मिश्रण: "मैंने meeting attend किया।"

🔹 3. भाषा के नवीन प्रयोग के प्रकार (Types of New Uses of Language)

1️⃣ सांस्कृतिक और सामाजिक नवीन प्रयोग (Cultural & Social Innovations)

- समाज और संस्कृति के बदलते स्वरूप के अनुसार भाषा में बदलाव।
- नए शब्द और मुहावरे प्रचलित होते हैं।

उदाहरण:

- "Work from Home" → घर से काम करना
- "Viral होना" → तेजी से फैलना

2️⃣ तकनीकी और डिजिटल प्रयोग (Technical & Digital Innovations)

- इंटरनेट, मोबाइल और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के कारण भाषा में नए प्रयोग।
- संक्षिप्त शब्द (Abbreviations), इमोजी और हाइब्रिड भाषा का प्रयोग।

उदाहरण:

- LOL = Laugh Out Loud
- BRB = Be Right Back
- हिंग्लिश (Hindi + English) का प्रयोग: "मैंने project complete कर दिया।"

3️⃣ साहित्यिक और रचनात्मक प्रयोग (Literary & Creative Innovations)

- कविता, कहानी, नाटक और सोशल मीडिया पर भाषा का नवीन प्रयोग।
- नए मुहावरे, शब्द निर्माण और शैलीगत प्रयोग।

उदाहरण:

- कविता में अंग्रेज़ी शब्दों का मिश्रण: "जीवन का GPS खो गया।"
- सोशल मीडिया पर रचनात्मक पोस्टिंग।

---

4 शैक्षणिक और व्यावसायिक प्रयोग (Educational & Professional Innovations)

- शिक्षा और व्यवसाय में भाषा के नए प्रयोग।
- तकनीकी शब्दावली और संक्षिप्ताक्षरों का उपयोग।

उदाहरण:

- PPT = PowerPoint
- KPI = Key Performance Indicator
- ऑनलाइन classes के लिए "Zoom करना"

---

5 भाषाई मिश्रण (Language Blending / Hybridization)

- अलग-अलग भाषाओं के शब्दों या वाक्यों का मिश्रण।
- अधिकतर शहरी क्षेत्रों और सोशल मीडिया में प्रचलित।

उदाहरण:

- "मैंने अपनी report submit कर दी।"
- "कल office में meeting होगी।"

---

4. भाषा के नवीन प्रयोग के कारण (Reasons for New Uses of Language)

1. **तकनीकी प्रगति (Technological Advancement)**
   - मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने भाषा को बदल दिया।
2. **सामाजिक परिवर्तन (Social Change)**
   - जीवन शैली, शिक्षा और रोजगार के कारण नई शब्दावली।
3. **सांस्कृतिक प्रभाव (Cultural Influence)**
   - फिल्म, संगीत और वैश्विक मीडिया के कारण विदेशी शब्द प्रचलित।
4. **साहित्यिक और रचनात्मक खोज (Literary & Creative Exploration)**

- कविता, कहानी, नाटक और डिजिटल साहित्य में प्रयोग।

5. **व्यावसायिक और शैक्षणिक आवश्यकता (Professional & Educational Requirement)**
   - संक्षिप्ताक्षर, तकनीकी शब्द और अंग्रेज़ी मिश्रित प्रयोग।

---

5. भाषा के नवीन प्रयोग के उदाहरण (Examples of New Uses of Language)

क्षेत्र	उदाहरण	विशेषता
सोशल मीडिया	LOL, OMG, Selfie, Viral	डिजिटल संक्षिप्ताक्षर, आधुनिक प्रयोग
शिक्षा	Online class, PPT, Assignment Submit	तकनीकी शब्द, अंग्रेज़ी मिश्रण
साहित्य	"जीवन का GPS खो गया।"	रचनात्मक और साहित्यिक प्रयोग
रोज़मर्रा की भाषा	"मैंने meeting attend किया।"	हिंग्लिश / मिश्रित भाषा
व्यावसायिक	KPI, E-mail, Feedback	व्यावसायिक संचार में नवीन प्रयोग

---

6. भाषा के नवीन प्रयोग के लाभ (Benefits of New Uses of Language)

1. **संचार में सरलता और त्वरितता (Ease & Speed of Communication)**
2. **तकनीकी और वैश्विक संदर्भ में प्रासंगिकता (Relevance in Tech & Global Context)**
3. **सृजनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा (Encourages Creativity & Innovation)**
4. **सामाजिक और सांस्कृतिक जुड़ाव (Social & Cultural Connectivity)**
5. **शिक्षा और व्यवसाय में दक्षता (Efficiency in Education & Profession)**

---

7. संभावित समस्याएँ (Potential Challenges)

1. **भाषाई शुद्धता का ह्रास (Loss of Linguistic Purity)**
   - अंग्रेज़ी मिश्रण और अनौपचारिक प्रयोग से।
2. **सांस्कृतिक असंतुलन (Cultural Imbalance)**

- पारंपरिक शब्दों और मुहावरों का कम प्रयोग।

3. **शिक्षण और साहित्य में कठिनाई (Difficulty in Education & Literature)**
    - विद्यार्थियों को पारंपरिक भाषा समझने में समस्या।